साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

पिता

शालिनी साहू
ऊँचाहार,रायबरेली(उ०प्र०)

.

एक वृक्ष जिसकी जडे बेहद कठोर अर्थात् सब कुछ सहने की क्षमता रखती हैं जिसके सहारे पूरा वृक्ष टिका रहता है!उसकी देख-रेख में पूरा वृक्ष हरा-भरा और लहलहाता रहता है...वैसे ही परिवार में भूमिका है.."पिता" की!! दृढ़ संकल्प अपने परिवार के प्रति प्रतिबद्ध !!माँ की तरह पिता भी स्नेह की मूरत होते हैं ..पर एक पिता को हर परिस्थितियों से होकर गुजरना होता है अपने परिवार को सदैव एक सूत्र में पिरोना होता है..इसलिए वे बाहर से थोड़ा कठोर नजर आते हैं माँ जैसे आँसू उनके तुरन्त नहीं छलक पाते हैं!पर हाँ इसका मतलब ये नहीं कि उनका प्यार अपने सन्तान के प्रति कम है!

प्रेम उतना ही है ..पर दायित्वों के निर्वाह के लिए एक पिता को दृढ़ होना पड़ता है ताकि वह अपनों पर आयी हुई सारी परिस्थितियों का बखूबी सामना कर सकें!

और इसके लिए थोड़ा कठोर बनाना आवश्यक है!बाकी अन्दर से वो एकदम मोम की ही तरह होते हैं!

माँ और पिता एक-दूसरे के पूरक है एक के अभाव में दूसरे का सुख ..सम्भव ही नहीं है!

....ऐसे में ही आज एक पिता की बात करते हैं ...जो अपने सन्तान के प्रति पूरी तरह समर्पित है!

...इलाहाबाद राजमार्ग पर स्थित खम्भन चाचा का बसेरा है...सच इन्होंने एक पिता होने की पूरी जिम्मेदारी निभायी है!

परिस्थितियों के भावावेग के कारण चाचा पढ़ाई से वंचित रहे!स्वयं मेहनत-मजदूरी करके अपने होश संभाले!

...कम ही उम्र में पिता बनने का मौका आता है...जी तोड़ मेहनत करते चाचा अपने परिवार के लिए...पैरों में बिन चप्पल के जीवन गुजरा एक ही कपड़े में सारे निमन्त्रण और त्यौहार सब!! पर अपनी सन्तान के लिए अच्छा सा अच्छा करने के लिए सदैव तत्पर!

ISSN 2454-2695
Volume 02 Issue 8
August 2016

स्वयं भूखा रहकर उसका भरण करना!

चाचा के इस त्याग में चाची का भी परस्पर सहयोग रहा! क्योंकि...बिना चाची के यह सम्भव ना था!

बच्चे बड़े हो गये!चाचा ने जिन परिस्थितियों में उन्हें पाला था यह तो उनका दिल जानता था! ना उन्हें धूप की परवाह होती थी और ना कँपकपाती ठण्ड!

....चाचा को बड़ा सुख होता जब बच्चों को देखते कि आज हमारा फल पढ़-लिखकर तैयार हो गया!!

भले हम ना पढ़ पावा तव का भा हमार लरकै तो बिरादरी मा नाम ऊँचा करैं हैं!

....सच चाचा को बड़ा गर्व होता अपने बच्चों पर!!

ये..गर्व उन्हीं के त्याग और तपस्या का ही परिणाम है आज!!

...वास्तव में पिता एक जड़ के समान होता है जिसके सहारे पूरा हरा-भरा वृक्ष लहलहाता रहता है!..

....ऐसे में हम अपने बाबू जी को भी बहुत सारी बधाईयाँ देते हैं जिन्होंने माँ के जाने के बाद दोनों रिश्तों का उत्तरदायित्व बड़ी ही बखूबी से निभाया है! ईश्वर से यही प्रार्थना है कि मुझे हर जन्म में आप ही पिता के रूप में मिलें!

.

पितृ दिवस(FATHER'S DAY) की अनन्त शुभकामनाएँ...हमारी तरफ से दुनियाँ के सभी पिता को!!

.